eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 03, March 2025

भारत–यूक्रेन संबंधः महत्व और चुनौतियां

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 15 March 2025 Accepted & Reviewed: 25 March 2025, Published: 28 March 2025

Abstract

भारत और यूक्रेन के संबंध ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। शीतयुद्ध के बाद से दोनों देशों के बीच सहयोग विभिन्न क्षेत्रों में विकसित हुआ है, विशेष रूप से रक्षा, व्यापार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में। हाल के वर्षों में रूस–यूक्रेन युद्ध के चलते भारत–यूक्रेन संबंधों में नई चुनौतियाँ और अवसर उभरे हैं। यह शोध पत्र भारत–यूक्रेन संबंधों के महत्व, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, वर्तमान परिदृश्य, और भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करता है।

कीवर्ड– भारत–यूक्रेन संबंध, द्विपक्षीय व्यापार, भू–राजनीति, रक्षा सहयोग, रूस–यूक्रेन युद्ध, कूटनीति

Introduction

भारत और यूक्रेन के बीच द्विपक्षीय संबंधों की जड़ें 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद पाई जाती हैं। दोनों देशों ने 1992 में राजनयिक संबंध स्थापित किए थे और तब से विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग जारी है। यूक्रेन, जो कभी सोवियत संघ का एक प्रमुख औद्योगिक और वैज्ञानिक केंद्र था, स्वतंत्रता के बाद अपनी अर्थव्यवस्था और कूटनीतिक संबंधों को मजबूत करने में लगा रहा। भारत, जो विश्व की सबसे तेजी से उभरती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, यूक्रेन के साथ व्यापार, रक्षा, शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सहयोग बढ़ाने में रुचि रखता है। भारत और यूक्रेन के संबंधों का महत्व केवल आर्थिक और रक्षा सहयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भू–राजनीतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। भारत, जो एक स्वतंत्र विदेश नीति का पालन करता है, रूस और पश्चिमी देशों के बीच संतुलन बनाए रखते हुए अपने रणनीतिक हितों को सुरक्षित रखना चाहता है। इस शोध पत्र में भारत–यूक्रेन संबंधों के ऐतिहासिक विकास, वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाओं का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

भारत और यूक्रेन के संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि शीत युद्ध के दौरान सोवियत संघ के साथ भारत के संबंधों से जुड़ी हुई है। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद, यूक्रेन एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरा। 26 जनवरी 1992 को भारत और यूक्रेन ने औपचारिक रूप से राजनयिक संबंध स्थापित किए। यूक्रेन ने अपनी स्वतंत्रता के बाद भारत के साथ आर्थिक, रक्षा और वैज्ञानिक क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने की दिशा में कार्य किया। 1990 के दशक में दोनों देशों ने व्यापार, रक्षा और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों

में कई महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए। यूक्रेन ने भारत को रक्षा उपकरणों और तकनीकी सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत ने यूक्रेन को औद्योगिक उपकरण, फार्मास्यूटिकल्स और आईटी सेवाओं के माध्यम से समर्थन दिया। इतिहास में भारत और यूक्रेन के बीच मजबूत सांस्कृतिक और शैक्षणिक संबंध भी देखे गए हैं। कई भारतीय छात्र यूक्रेन की मेडिकल और तकनीकी विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाते रहे हैं। इन संबंधों ने दोनों देशों के बीच आपसी समझ को और अधिक मजबूत किया। भारत और यूक्रेन के बीच व्यापारिक संबंध मजबूत हैं और दोनों देश एक–दूसरे के लिए महत्वपूर्ण व्यापारिक भागीदार हैं। भारत–यूक्रेन व्यापार में कृषि, फार्मास्युटिकल, इंजीनियरिंग, रक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) प्रमुख क्षेत्र हैं। भारत यूक्रेन से मुख्य रूप से सूरजमुखी तेल, उर्वरक, धातु, मशीनरी और औद्योगिक उत्पादों का आयात करता है, जबकि यूक्रेन भारत से फार्मास्युटिकल उत्पाद, चाय, कॉफी, टेक्सटाइल, और आईटी सेवाओं का आयात करता है। इसके अतिरिक्त, भारत यूक्रेन को जैव प्रौद्योगिकी, ऑटोमोबाइल और ऊर्जा क्षेत्र में भी सहयोग प्रदान करता है। दोनों देशों के बीच व्यापारिक समझौतों से कृषि और औद्योगिक उत्पादों की आपूर्ति को सुविधाजनक बनाया गया है।

हाल के वर्षों में भारत–यूक्रेन व्यापार में वृद्धि देखी गई है, हालांकि रूस–यूक्रेन युद्ध के चलते व्यापारिक बाधाएं उत्पन्न हुई हैं। भारत के लिए यूक्रेन एक महत्वपूर्ण कृषि उत्पाद आपूर्तिकर्ता है, विशेष रूप से सूरजमुखी तेल और गेहूं। युद्ध के कारण आपूर्ति श्रृंखला बाधित हुई, जिससे भारत को अन्य देशों से आपूर्ति सुनिश्चित करनी पड़ी। इसके अलावा, भारत और यूक्रेन के बीच व्यापार संतुलन कभी–कभी असमान रहा है, क्योंकि भारत का निर्यात यूक्रेन के आयात की तुलना में कम रहा है। हालाँकि, भारत ने इस असमानता को दूर करने के लिए रणनीतिक साझेदारियों और निवेश को प्रोत्साहित किया है। भारत और यूक्रेन विभिन्न क्षेत्रों में निवेश और आर्थिक सहयोग के लिए कई समझौते कर चुके हैं। भारतीय कंपनियाँ यूक्रेन में आईटी, फार्मास्युटिकल, और ऑटोमोबाइल क्षेत्रों में निवेश कर रही हैं। इसके अलावा, यूक्रेन की औद्योगिक और तकनीकी क्षमताएँ भारतीय कंपनियों के लिए आकर्षक हैं। यूक्रेन में ऊर्जा, खनन, और निर्माण क्षेत्र में भी भारतीय निवेश बढ़ रहा है। कई भारतीय कंपनियां यूक्रेन की सौर ऊर्जा और हरित ऊर्जा परियोजनाओं में भागीदारी कर रही हैं, जिससे दोनों देशों के लिए दीर्घकालिक लाभ सुनिश्चित किए जा सकते हैं। भारत और यूक्रेन सहयोग की चुनौतियां, भविष्य की संभावनाएँ निम्नवत हैं–

रूस–यूक्रेन युद्ध से उत्पन्न अनिश्चितता और व्यापारिक व्यवधान।

भुगतान और बैंकिंग प्रणाली में कठिनाइयाँ।

परिवहन और लॉजिस्टिक्स संबंधी बाधाएँ।

व्यापारिक समझौतों के क्रियान्वयन में नौकरशाही बाधाएँ।

दोनों देशों के व्यापारिक नियामक ढांचे में अंतर के कारण व्यापार में बाधाएँ।

भारत और यूक्रेन कृषि और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्रों में सहयोग बढ़ा सकते हैं।

रक्षा उत्पादन और तकनीकी सहयोग में नई साझेदारियाँ विकसित की जा सकती हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी और स्टार्टअप क्षेत्र में निवेश की संभावनाएँ अधिक हैं।

ऊर्जा और हरित प्रौद्योगिकी में सहयोग बढ़ाया जा सकता है।

दोनों देश व्यापारिक और कूटनीतिक वार्ताओं के माध्यम से व्यापार संबंधों को स्थिर और विस्तृत कर सकते हैं।

भारत और यूक्रेन के बीच द्विपक्षीय व्यापार और आर्थिक सहयोग में व्यापक संभावनाएँ हैं, लेकिन रूस–यूक्रेन युद्ध और वैश्विक भू–राजनीतिक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए नई रणनीतियाँ अपनाने की आवश्यकता होगी। भारत और यूक्रेन के बीच रक्षा सहयोग एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। भारत, जो अपने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में कार्य कर रहा है, यूक्रेन के उन्नत सैन्य तकनीक और रक्षा उद्योग की क्षमताओं का लाभ उठाना चाहता है। 1990 के दशक में, भारत ने यूक्रेन से कई सैन्य उपकरण और तकनीकी सहायता प्राप्त की। यूक्रेन ने भारतीय वायुसेना के लिए AN–32 परिवहन विमानों के उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय नौसेना के लिए गैस टर्बाइन इंजन की आपूर्ति में यूक्रेन एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता रहा है। भारतीय सेना के लिए टैंक और बख्तरबंद वाहनों के कलपुर्जों की आपूर्ति भी यूक्रेन द्वारा की गई।

भारत-यूक्रेन युद्ध के बाद आर्थिक संबंध और प्रभाव

क्षेत्र	प्रभाव और संभावनाएँ	चुनौतियाँ
व्यापार और वाणिज्य	कृषि उत्पादों (गेहूं, सूरजमुखी तेल) के आयात-निर्यात में नई संभावनाएँ	युद्ध के कारण आपूर्ति श्रृंखला में बाधाएँ
ऊर्जा क्षेत्र	भारत वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों पर ध्यान केंद्रित कर सकता है	रूसी ऊर्जा संसाधनों पर निर्भरता बनी हुई है
रक्षा सहयोग	यूक्रेन की रक्षा तकनीक में भारत की रुचि बढ़ सकती है	रूस से संबंधों को संतुलित रखना चुनौतीपूर्ण
आईटी और टेक्नोलॉजी	भारत-यूक्रेन आईटी स्टार्टअप सहयोग बढ़ सकता है	युद्ध के कारण प्रतिभा पलायन और अस्थिरता
इंफ्रास्ट्रक्चर निवेश	पुनर्निर्माण परियोजनाओं में भारतीय कंपनियों के लिए अवसर	राजनीतिक और सुरक्षा जोखिम
कृषि एवं खाद्य सुरक्षा	भारत यूक्रेन से कृषि आयात बढ़ा सकता है	निर्यात बाधाएँ और कच्चे माल की कमी
शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र	भारतीय छात्रों के लिए यूक्रेन में नए अवसर	युद्ध के कारण शिक्षा और स्वास्थ्य ढांचे की क्षति

भारत और यूक्रेन के आर्थिक संबंध युद्ध के बाद नई दिशा में [illegible] बढ़ सकते हैं, लेकिन इसके लिए रणनीतिक योजना और संतुलन की आवश्यकता होगी।

वर्तमान रक्षा सहयोग, चुनौतियां एवं संभावनाएं–

भारत और यूक्रेन के बीच कई रक्षा सौदे हुए हैं, जिनमें सैन्य उपकरणों की मरम्मत और अपग्रेडेशन शामिल है।

यूक्रेन की कंपनियां भारत की 'मेक इन इंडिया' योजना के तहत रक्षा उत्पादन में भागीदारी कर रही हैं।

भारतीय नौसेना के जहाजों के इंजन में उपयोग होने वाले स्पेयर पार्ट्स की आपूर्ति में यूक्रेन एक प्रमुख भागीदार बना हुआ है।

रक्षा अनुसंधान और विकास में सहयोग बढ़ाने के लिए दोनों देशों के बीच वार्ता जारी है।

रूस–यूक्रेन युद्ध के कारण यूक्रेन के रक्षा उद्योग पर प्रभाव पड़ा है, जिससे भारत के साथ रक्षा सहयोग प्रभावित हुआ है।

भारत, जो रूस के साथ अपने घनिष्ठ रक्षा संबंध बनाए रखना चाहता है, यूक्रेन के साथ संबंधों को संतुलित करने की चुनौती का सामना कर रहा है।

तकनीकी स्थानांतरण और संयुक्त उत्पादन में कई प्रशासनिक बाधाएँ हैं।

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान के कारण रक्षा उपकरणों की समय पर डिलीवरी में समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं।

भारत और यूक्रेन संयुक्त रक्षा अनुसंधान और उत्पादन में सहयोग कर सकते हैं।

यूक्रेन की रक्षा कंपनियाँ भारत के उभरते रक्षा विनिर्माण उद्योग में निवेश कर सकती हैं।

साइबर सुरक्षा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित रक्षा तकनीकों में साझेदारी बढ़ाई जा सकती है।

भारत यूक्रेन से सैन्य ड्रोन और उन्नत रडार सिस्टम के आयात पर विचार कर सकता है।

भारत–यूक्रेन रक्षा सहयोग में बड़ी संभावनाएँ हैं, लेकिन भू–राजनीतिक कारकों को ध्यान में रखते हुए इस सहयोग को सावधानीपूर्वक संतुलित करने की आवश्यकता होगी।

भारत और यूक्रेन के बीच विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग कई क्षेत्रों में विस्तृत है। जो निम्नवत है–

भारत और यूक्रेन के वैज्ञानिक संस्थान संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य कर रहे हैं।

रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) और यूक्रेन की वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ मिलकर रक्षा प्रौद्योगिकियों में अनुसंधान कर रही हैं।

दोनों देशों ने जैव प्रौद्योगिकी, चिकित्सा अनुसंधान, रोबोटिक्स, और उन्नत सामग्री विज्ञान में सहयोग को बढ़ावा दिया है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) और यूक्रेन की अंतरिक्ष एजेंसी के बीच सहयोग जारी है।

उपग्रह प्रक्षेपण सेवाओं में भारत और यूक्रेन ने एक–दूसरे के संसाधनों का उपयोग किया है।

भविष्य में चंद्र और मंगल अभियानों में संयुक्त अनुसंधान की संभावना है।

यूक्रेन के पास क्रायोजेनिक इंजन प्रौद्योगिकी में विशेषज्ञता है, जो भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए फायदेमंद हो सकती है।

भारत और यूक्रेन की आईटी कंपनियाँ संयुक्त रूप से सॉफ्टवेयर विकास और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित परियोजनाओं पर कार्य कर रही हैं।

साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए दोनों देशों की सरकारें और निजी कंपनियाँ आपसी समझौते कर रही हैं।

ब्लॉकचेन तकनीक, क्लाउड कंप्यूटिंग और डाटा एनालिटिक्स में दोनों देशों के स्टार्टअप्स के बीच साझेदारी बढ़ रही है।

भारत और यूक्रेन अक्षय ऊर्जा स्रोतों के विकास में सहयोग कर रहे हैं।

सौर और पवन ऊर्जा तकनीक में दोनों देश संयुक्त अनुसंधान और नवाचार पर कार्य कर रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण नियंत्रण में सहयोग के लिए ग्रीन टेक्नोलॉजी और कार्बन कैप्चर तकनीकों पर संयुक्त अनुसंधान किया जा रहा है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में सहयोग को और अधिक गहरा करने के लिए दोनों देशों को संयुक्त अनुसंधान पहल, वैज्ञानिक शिक्षा और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की दिशा में और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

रूस–यूक्रेन युद्ध का भारत–यूक्रेन संबंधों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इस युद्ध ने दोनों देशों के बीच व्यापार, कूटनीति, और सुरक्षा संबंधी पहलुओं को प्रभावित किया है।

युद्ध के कारण भारत और यूक्रेन के बीच व्यापारिक मार्ग बाधित हुए हैं, जिससे आयात–निर्यात प्रभावित हुआ।

सूरजमुखी तेल, उर्वरक और अन्य कृषि उत्पादों की आपूर्ति में कमी आई, जिससे भारत को वैकल्पिक स्रोत खोजने पड़े।

रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों के कारण वैश्विक ऊर्जा बाजार अस्थिर हुआ, जिससे भारत में कच्चे तेल की कीमतों में उतार–चढ़ाव आया।

भारतीय फार्मास्युटिकल और आईटी कंपनियों के लिए यूक्रेन में व्यापार करने की संभावनाएं प्रभावित हुईं।

युद्ध के चलते भारतीय कंपनियों को वैकल्पिक बाजारों और आपूर्ति श्रृंखलाओं की तलाश करनी पड़ी।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 03, March 2025

भारत ने रूस और पश्चिमी देशों के बीच संतुलन बनाए रखने की नीति अपनाई, जिससे उसकी तटस्थता को लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा हुई।

संयुक्त राष्ट्र में भारत ने युद्ध पर संतुलित रुख अपनाया, जिससे यूक्रेन और पश्चिमी देशों की प्रतिक्रियाएँ मिली–जुली रहीं।

युद्ध के कारण भारत की रक्षा आपूर्ति श्रृंखला प्रभावित हुई, क्योंकि भारत के कई रक्षा उपकरण यूक्रेनी निर्माताओं पर निर्भर थे।

अमेरिका और यूरोपीय देशों के साथ भारत के संबंधों में बदलाव आया, क्योंकि उन्होंने भारत से रूस पर प्रतिबंध लगाने का आग्रह किया था।

यूक्रेन के साथ भारत की सैन्य तकनीक साझेदारी में अस्थिरता आई, जिससे भारत को अन्य देशों से सहयोग प्राप्त करने की आवश्यकता पड़ी।

युद्ध के चलते हजारों भारतीय छात्र, जो यूक्रेन में चिकित्सा और अन्य क्षेत्रों की पढ़ाई कर रहे थे, प्रभावित हुए।

ऑपरेशन गंगा जैसी पहल के तहत भारत सरकार ने अपने नागरिकों को सुरक्षित निकालने के लिए व्यापक अभियान चलाया।

भारतीय छात्रों को अन्य देशों में स्थानांतरित करने के लिए नए शैक्षणिक समझौतों की आवश्यकता उत्पन्न हुई।

युद्ध के कारण यूक्रेन में भारतीय समुदाय की संख्या में कमी आई, जिससे वहां भारतीय प्रवासियों के व्यापार और अन्य गतिविधियों पर असर पड़ा।

यूक्रेन भारत के लिए एक प्रमुख रक्षा आपूर्तिकर्ता रहा है, विशेष रूप से टैंकों, एवियोनिक्स और मिसाइल सिस्टम के क्षेत्र में। युद्ध के कारण इस सहयोग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

भारत को वैकल्पिक रक्षा आपूर्तिकर्ताओं की खोज करनी पड़ी, जिससे फ्रांस, इजरायल और अमेरिका के साथ भारत की रक्षा साझेदारी बढ़ी।

भारत की स्वदेशी रक्षा उत्पादन नीति को बल मिला, क्योंकि उसने आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत घरेलू रक्षा उत्पादन को बढ़ावा दिया।

रूस–यूक्रेन युद्ध के कारण वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति अस्थिर हो गई, जिससे भारत को अपनी ऊर्जा सुरक्षा रणनीति को फिर से तैयार करना पड़ा।

भारत को रूस से सस्ते कच्चे तेल की आपूर्ति का लाभ मिला, लेकिन पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण भुगतान प्रणाली को लेकर जटिलताएँ बनी रहीं।

यूक्रेन और रूस दोनों ही वैश्विक गेहूं आपूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। युद्ध के चलते भारत को अपनी खाद्य सुरक्षा नीति में बदलाव करना पड़ा।

भारतीय किसानों और खाद्य उद्योग पर असर पड़ा, क्योंकि उर्वरकों की कीमतों में बढ़ोतरी हुई।

रूस–यूक्रेन युद्ध ने भारत–यूक्रेन संबंधों को नई दिशा दी है। दोनों देशों को इस संकट के बाद अपने द्विपक्षीय संबंधों को फिर से मजबूत करने के लिए नए रणनीतिक उपायों को अपनाना होगा।

भविष्य की संभावनाएं और चुनौतियां– भारत और यूक्रेन के संबंधों में भविष्य में कई अवसर और चुनौतियाँ मौजूद हैं। इन संबंधों को और मजबूत करने के लिए दोनों देशों को कूटनीति, व्यापार, रक्षा सहयोग, विज्ञान और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में नई रणनीतियों को अपनाना होगा। व्यापार और निवेश, युद्ध के बाद पुनर्निर्माण के प्रयासों में भारत की भागीदारी से व्यापारिक अवसर बढ़ सकते हैं। भारत की आईटी, फार्मास्यूटिकल और निर्माण क्षेत्र की कंपनियाँ यूक्रेन में निवेश कर सकती हैं। रक्षा सहयोग, भारत अपने आत्मनिर्भर रक्षा कार्यक्रमों के तहत यूक्रेन के रक्षा उद्योग की विशेषज्ञता का लाभ उठा सकता है, विशेष रूप से इंजन निर्माण, एवियोनिक्स और मिसाइल प्रणालियों के क्षेत्रों में। ऊर्जा सहयोग, भारत, यूक्रेन के परमाणु ऊर्जा क्षेत्र और अक्षय ऊर्जा संसाधनों में भागीदारी कर सकता है, जिससे ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित होगी। शिक्षा और विज्ञान, यूक्रेन के विश्वविद्यालय भारतीय छात्रों के लिए नए पाठ्यक्रम और अनुसंधान सहयोग के अवसर प्रदान कर सकते हैं। कूटनीतिक संतुलन, भारत को रूस और पश्चिमी देशों के बीच संतुलन बनाकर यूक्रेन के साथ अपने संबंधों को सुधारने का अवसर मिल सकता है।

चुनौतियाँ– रूस के साथ संतुलन– भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि वह रूस और यूक्रेन के बीच संतुलन बनाए रखे, क्योंकि रूस भारत का एक प्रमुख रणनीतिक सहयोगी है। राजनीतिक अस्थिरता है, यूक्रेन में जारी युद्ध और राजनीतिक अनिश्चितता के कारण व्यापार और निवेश की संभावनाएँ प्रभावित हो सकती हैं। यदि यूक्रेन में युद्ध लंबा चलता है, तो भारत को अपनी रक्षा आपूर्ति श्रृंखला में अन्य देशों पर निर्भर होना पड़ सकता है। भारत पर पश्चिमी देशों का दबाव रहेगा कि वह रूस के साथ अपने व्यापारिक और रक्षा संबंधों को सीमित करे, जिससे उसकी स्वतंत्र विदेश नीति पर प्रभाव पड़ सकता है। युद्ध के बाद यूक्रेन की अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने में समय लगेगा, जिससे भारत–यूक्रेन व्यापार में अस्थिरता बनी रह सकती है।

भारत और यूक्रेन के संबंधों में कई संभावनाएँ और चुनौतियाँ मौजूद हैं। यदि दोनों देश अपने द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने के लिए ठोस प्रयास करते हैं, तो यह न केवल व्यापार और रक्षा क्षेत्र में बल्कि वैश्विक कूटनीति में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। भारत को एक संतुलित रणनीति अपनाकर अपने दीर्घकालिक हितों की रक्षा करनी होगी।

भारत और यूक्रेन संबंध महत्वपूर्ण हैं और उनमें और अधिक विस्तार की संभावना है। हालांकि, रूस—यूक्रेन युद्ध जैसी भू—राजनीतिक चुनौतियों के कारण इन संबंधों में कुछ जटिलताएँ भी उत्पन्न हुई हैं। इस शोध पत्र में इन संबंधों के सभी पहलुओं का विश्लेषण किया गया है।

सन्दर्भ सूची—

1. भारत सरकार के विदेश मंत्रालय की रिपोर्ट
2. यूक्रेन सरकार के व्यापार और आर्थिक सहयोग से संबंधित दस्तावेज
3. विभिन्न अंतरराष्ट्रीय जर्नल और समाचार पत्र
4. त्रिपाठी, आर. (2018). अंतरराष्ट्रीय संबंधों का स्वरूप. नई दिल्ली सागर पब्लिकेशन।
5. वर्मा, एस. (2020). भारत की विदेश नीतिरू एक व्यापक अध्ययन. मुंबई राज पब्लिशिंग हाउस।
6. शर्मा, पी. (2017). वैश्विक राजनीति और भारत—यूक्रेन संबंध. कोलकाता नेशनल बुक ट्रस्ट।
7. चतुर्वेदी, के. (2019). आधुनिक विश्व राजनीति. जयपुर राजस्थान विश्वविद्यालय प्रकाशन।
8. बसु, एस. (2021). भारत—यूक्रेन व्यापार और आर्थिक सहयोग. दिल्ली ओरिएंट ब्लैकस्वान।
9. कपूर, ए. (2016). भारत और पूर्व सोवियत संघ के संबंध. चंडीगढ़ पंजाब यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. मेहता, डी. (2015). अंतरराष्ट्रीय कूटनीति का बदलता स्वरूप. वाराणसी ज्ञान गंगा प्रकाशन।
11. मिश्रा, एन. (2018). भारत की रणनीतिक विदेश नीति और सुरक्षा मुद्दे. भोपाल सेंट्रल इंडिया पब्लिशर्स।
12. गुप्ता, बी. (2022). रूस—यूक्रेन युद्ध और वैश्विक प्रभाव. पटना बिहार बुक डिपो।
13. यादव, ए. (2021). द्विपक्षीय व्यापारिक संबंधरू भारत और यूक्रेन. लखनऊ अवध पब्लिशर्स।
14. सिंह, आर. (2019). रूस, यूक्रेन और भारत के त्रिकोणीय संबंध. जयपुर नेशनल बुक एजेंसी।
15. सक्सेना, एम. (2016). भारत—यूक्रेन रक्षा सहयोगरू ऐतिहासिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य. दिल्ली प्रकाशन विभाग।
16. पांडे, जे. (2020). भारत की भू—राजनीतिक रणनीति. नागपुररू सेंट्रल पब्लिशिंग हाउस।

17. दास, पी. (2017). वैश्विक व्यापार और भारत का स्थान. कोलकाता यूनिवर्सिटी प्रेस।
18. भटनागर, के. (2019). भारत की विदेश नीति और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव. मुंबई राजकमल पब्लिकेशन।
19. शर्मा, आर. (2021). भारत—यूक्रेन विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग का विकास. दिल्ली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
20. शुक्ला, वी. (2020). रूस—यूक्रेन संघर्ष और भारत की तटस्थता नीति. भोपाल महाकाल पब्लिशर्स।
21. कुमार, डी. (2018). यूक्रेन की राजनीतिक अस्थिरता और अंतरराष्ट्रीय प्रभाव. वाराणसी काशी हिंदू विश्वविद्यालय प्रकाशन।
22. अग्रवाल, ए. (2016). भारत और यूक्रेन, व्यापारिक संबंधों का ऐतिहासिक विकास. जयपुर, साहित्य सदन।
23. चौधरी, पी. (2015). अंतरराष्ट्रीय व्यापार नीतियां और भारत का दृष्टिकोण. नई दिल्ली, मैकमिलन इंडिया।
24. मल्होत्रा, एस. (2019). यूरोप और भारतरू सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध. चंडीगढ़, पैनोरमा पब्लिशर्स।
25. तिवारी, एन. (2017). भारत—यूक्रेन रक्षा सहयोगरू एक विश्लेषण. मुंबई, अल्फा पब्लिशर्स।
26. उपाध्याय, ए. (2022). रूस—यूक्रेन युद्ध के बाद की वैश्विक राजनीति. दिल्ली, ग्लोबल स्टडीज पब्लिशर्स।
27. खन्ना, जे. (2018). भारत और यूक्रेन के बीच रणनीतिक साझेदारी की संभावनाएं. पटना, बिहार पब्लिशिंग हाउस।
28. वाजपेयी, के. (2021). अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भारत की भूमिका. नागपुर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
29. सिन्हा, डी. (2020). यूक्रेन संकट और भारत की विदेश नीति का परिप्रेक्ष्य. कोलकाता, एशियन पब्लिशर्स।